एम.एच.डी.-15
हिन्दी उपन्यास-2
सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 4 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी. - 15
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी.-15/टीएमए/2020–2021
कुल अंक : 100

1. **निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :** $10 \times 4 = 40$

(क) विवाह केवल दो व्यक्तियों का ही संबंध भी नहीं होता। कम से कम हमारे समाज में, यह परिवारों का भी संबंध बन जाता है। आप बुरा न मानें, मेरा विचार है कि आजीवन सब लोगों का विरोध या असहयोग झेलते रहना सुखद नहीं हो सकता। सीधी बात है, कनक आकर्षक लड़की है और कनक ही क्या, बहुत–सी शिक्षित और भावुक लड़कियाँ आपके प्रति आकर्षण अनुभव करेंगी। यह तो सब स्वाभाविक बात थी। साफ बात कहने में हर्ज क्या है ! जीवन में आकर्षण के अवसर तो आते ही रहते हैं पर उसमें जीवन भर के लिए बंधते समय बहुत सी बातों का ध्यान भी रखना पड़ता है। आप यह तो अनुभव कर रहे कि मैं बहुत अधिक अधिकार जता रहा हूँ।

(ख) कक्कूखाँ बोले 'कवायद तो नहीं, पर मेहनत तो जिवियों पर भी होती है न! असल तो वरदी है बंदे को सवाया कर देती है।'

''जट्ट को पहन पचर पोशाक क्या कहें। आख्यान है न–चिट्टा कपड़ा और कुक्कड़ खाना, उस जट्ट का नहीं ठिकाना।''

मौलादाद जी बोले ''अपनी–अपनी कार और अपने–अपने साज–सिंगार! फसलों की रंगत–रूप हत्थ की मेहनत से, अल्लाह तआला की बरकत से! यह तो ठीक है, महीन कप्पड़ और मुर्ग–पुलाव से खेती की वाही–त्राही नहीं होती।''

शाह जी ने बात उठा ली– ''मौलादाद जी, बड़ी सयानफ़ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का ओढ़न न पकड़े तो धरती माँ क्यों दूध पिलाने लगी! अपने वेद–शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर–प्यार से सींचा–सराहा न जाए तो माँ के थनों की तरह धरती के सुंब भी पूरी तरह नहीं खुलते। जो सुंब न खुलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गईं।''

(ग) बस, माणिक मुल्ला भी तुम्हारा ध्यान उस अथाह पानी की ओर दिला रहे हैं जहाँ मौत है, अँधेरा है, कीचड़ है, गंदगी है। या तो दूसरा रास्ता बनाओ नहीं तो डूब जाओ। लेकिन आधी इंच ऊपर जमी बरफ़ कुछ काम न देगी। एक ओर नये लोगों का यह रोमानी दृष्टिकोण, यह भावुकता, दूसरी ओर बूढ़ों का यह थोथा आदर्श और झूठी अवैज्ञानिक मर्यादा सिर्फ आधी इंच बरफ़ है, जिसने पानी की खूँखार गहराई को छिपा रखा है।

(घ) यह चिंतन कुछ इस प्रकार का था। यदि तुम्हारे हाथ में शक्ति है तो उसका उपयोग प्रत्यक्ष रूप से उस शक्ति को बढ़ाने के लिए न करो। उसके द्वारा कुछ नई और विरोधी शक्तियाँ पैदा करो और उन्हें इतनी मजबूती दे दो कि वे आपस में एक–दूसरे से संघर्ष करती रहें। इस प्रकार तुम्हारी शक्ति

सुरक्षित और सर्वोपरि रहेगी। यदि तुम केवल अपनी शक्ति के विकास की ही चेष्टा करते रहे और दूसरी परस्पर–विरोधी शक्तियों की सृष्टि, स्थिति और संहार के नियंत्रक नहीं बने तो कुछ दिनों बाद कुछ शक्तियाँ किसी अज्ञात अप्रत्याशित कोण से उभरकर तुम पर हमला करेंगी और तुम्हारी शक्ति छिन्न–भिन्न कर देंगी।

2. अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'झूठा सच' कहाँ तक सफल है ? विचार कीजिए। 10

3. कृष्णा सोबती की प्रमुख औपन्यासिक रचनाओं का परिचय दीजिए। 10

4. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' के भाषिक शिल्प की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। 10

5. 'राग दरबारी' में चित्रित स्वातंत्र्योत्तर भारत के यथार्थ पर प्रकाश डालिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : $5 \times 4 = 20$

   (क) 'रागदरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य की सीमाएँ
   (ख) 'धर्मवीर भारती का साहित्यिक योगदान
   (ग) 'जिंदगीनामा' का भाषा वैशिष्ट्य
   (घ) 'झूठा सच' की अंतर्वस्तु